# ढोल बजै छै ढम्मक ढम

# ढोल बजै छै ढम्मक ढम

प्रथम प्रकाशन
जनवरी १९९४

प्रकाशक
समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका (बिहार)

नूनू बाबू सिनी,

आय तक अंगिका में जे लिखलों गेलै, ऊ बड़के लेली ज्यादा। हम्में समझै छियै, कि है सब देखी-सुनी तोरा सिनी मने मन कुढ़तें होभौ, मजकि आबें कुढ़वों आकि रुसवों छोड़ों। गैवों-हाँसवों सब्भे शुरू करों, 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम' रों साथे-साथ।

तोरों बड़ों भाय

अमरेन्द्र

❖ कविता-क्रम


- विनती /5
- मुर्गा/6
- मछली /6
- छाता/7
- कौआ/7
- नाना रों घोंर/8
- जाड़/8
- महाकवि सुमन सूरो/9
- बकरी/9
- दीवाली/10
- नया युनियन/11
- विनती /12
- लार्‌हों /13
- भोर/14
- चाँद/14
- गाँधी बाबा/15
- थुलथुल बाबा/15
- बादल/16
- रेल/17
- ढोल/17
- सीख/18
- वर्ण कविता–१/19
- वर्ण कविता–२/19
- नाम बताव/20
- बोली/21
- शिक्षा/22
- भालू/23
- पुरुष पंचांग/23
- हाथी/24
- फक्कड़दा रों पाठ/24
- मामा/26
- डोमनदा/27
- ऊँट/27
- जोड़/28
- टुनमा रों अंगदेश/28

# विनती

हे भगवान,  हे भगवान!
रखियो बच्चो केरॉ मान!

उमिर बढ़ै ज्यों जीरॅं-जीरॅं,
ज्ञान बढैय्यॉं धीरॅं-धीरॅं,
माय-बाबू रॉं साथ समाज
जोगियो हिनकॉं पगड़ी-ताज;
देव पुरैय्यॉं ई अरमान!
हे भगवान,  हे भगवान !

गोय्यां-गोद्धा रहै नै रुष्ट,
माँते खैतॅं रहि जाय दुष्ट,
हमरा गाँधी-बोष बनैय्यॉं,
देश-धरम रॉं राह दिखैय्यॉं;
देशे वास्तें छूटै प्राण!
हे भगवान,  हे भगवान!

## मुर्गा

मुर्गा बाँग लगावै छै,
भोरे भोर जगावै छै।

जेन्हैं भोरकवा उगलोॅ कि,
चंदा-तारा डुबलोॅ कि,
पहरेदारोॅ रं जोरोॅ सें
कुकड़ू कूँ सुनावै छै।
मुर्गा बाँग लगावै छै,
भोरे भोर जगावै छै।

पनसोखा रं पखना छै,
मूड़ी उपरे रखना छै,
मोर सुहावै जेहनोॅ सर पर
लौकेट होने सुहावै छै!
मुर्गा बाँग लगावै छै,
भोरे भोर जगावै छै।

## मछली

मछली रानी छलमल-छल,
जत्तेॅ उछलै ओत्तै जल।

चोय्याँ चमचम पन्नी रं,
चानी केरोॅ चौवन्नी रं,
गजगज तारा झुक्कोॅ फूल,
पीठीं छाती चाट्ठोॅ शूल;
तोहरोॅ वास्तें पोखरी जेहनोॅ,
होने बोहोॅ खल-खल-खल।

केना चलै छोॅ एत्तेॅ तेज?
कहाँ सुतै छोॅ, कथी के सेज?
जलो में गरमी लगै छौं की;
पंखे रं डोलौं दुमड़ी?
के सिखलैलकौं तैरै लेॅ ई?
करवा आदत अदल-बदल!

## छाता

कारों-कारों छाता है,
सबके प्यारों छाता है।
गर्मी लें, बरसातों लें;
जेना हँकारों छाता है।
जहाँ मिलौं पड़पड़िया धूप,
वहीं पुकारों 'छाता है ?'
ऊ की भिंजतै बरसा में,
जेकरा ठारों छाता है।
छत्तीस ठों कें त्राण वहीं,
जहाँ अठारों छाता है।
छतरी नै बीहा करतै,
भले कुमारों छाता है ।

## कौआ

कौऔ हो कक्का काँव-काँव,
आरो कहीं नै तें हमरै कन ठाँव!
केना कें सूझै छौं, इतनी टा आँख?
हमरे चूलों रं छौं तोहरों तें पाँख,
लंबा ठो देहों में चुटकी भर मूड़ी,
तिरगैंलें चोंच रहों लुचकै लें पूड़ी।
केना देह संभलै छौं, काठी रं पाँव?
कौआ हो कक्का काँव-काँव।

गगलौ, तें केना कें काकी बुलावौ,
दूध-भात तोरा लें कैन्हें जुटावौं?
हम्में हड़कम्प रहौं देखथैं बस तोरा,
घुसकी जाँव माय लुग लै दूध के कटोरा।
ताके में रहै छों, केना कें खाँव,
कौआ हो कक्का काँव-काँव ।

## नाना रों घोंर

दै नै कभी लेमनचूस छै,
मौसी बड़ी ही कंजूस छै।
मौसा गप्पे हाँकै छै,
दू सेर चूड़ा फाँकै छै।
मामो रहै छै हरदम नील,
मामी केरों अंटी ढील।
पैलें सौ ठो रुप्पा छै,
फुप्फा फुली कें कुप्पा छै।
केकरो नै केकरौ सें मेल,
नाना रों घर लागै जेल।

## जाड़

दलदल दलकै हमरों हाड़,
सुइये रं चूभै छै जाड़।
कँपकँप काँपै दोनों ठोर,
कस्सी बान्हलौं गाँती जोर।
ओढ़ना ओढ़ों, वही रजाय,
बुतरु वास्तें जाड़ कसाय।
कनकन्नों राते रं भोर,
गुरुओ जी सें जाड़ कठोर।
रौदा उगै नै खेलौं खेल,
बुतरू वास्तें जाड़ा जेल।
गल्लों जाय छै हमरों हाड़,
कहिया जैभा तोहें जाड़?

## महाकवि सुमन सूरो

सादा-सीधा भेष दिखै,
कविता, खिस्सा, लेख लिखै।
बकबक करै नै, चुप्पे मौन,
भरलोॅ भादोॅ, सुखलोॅ सौन।
सुमन कवि के बड़ा अमोल?
एक सुरोॅ में 'सूरो' बोल ।

## बकरी

उर्र बकरिया आवी जो;
में-में करी कें गावी जो!
देह तोरोॅ भोकनोॅ-भोकनोॅ,
बाल तोरोॅ चिकनोॅ-चिकनोॅ,
लम्बा कान डुलावै छैं!
केकरा तोहें बुलावै छैं?
आँख कमल रोॅ कोढ़ी रं,
सींग माथा पर बोढ़ी रं,
सींग कें कैन्हें डुलावै छैं?
हमरा तोहें डरावै छैं?
है नै समझैं कि डरवौ,
पीठी पर हम्मेॅ चढ़वौ,
पूँछ तोरोॅ छौ फुदुर-फुदुर,
बकरी हिन्नें टुघुर-टुघुर!

# दिवाली

फेनु दिवाली ऐलों छै,
माय नें घोंर सजैलों छै।
जगमग-जगमग दीया छै,
जेना मणि के कीया छै।
घुर, घुर, घुर, घुरघुरिया छै,
छुर, छुर, छुर, छुरछुरिया छै।
पड़, पड़, पड़, पड़, फटाक-फटाक,
छुटै पड़ाका झटाक-झटाक।
लुक्का-पाती बड़का लें,
टिकरी-मिट्ठों लड़का लें।
बाहर भेलै दलिद्दर आय,
भीतर ढुकलै लक्ष्मी माय!
सौंसे दुनियाँ झक-झक-झक,
उलुवाँ देखै टक-टक-टक।
डर्है अन्हार नुकैलों छै,
फेनु दिवाली ऐलों छै।

# नया युनियन

पापा हमरों बात सुनों
एक युनियन नया बनाना छै,
पप्पू ओकरों लीडर होतै
नारो खूब लगाना छै।
संझकी रोजे भाषण होतै,
पापा सबटा बात सुनों;
मम्मी रों तानाशाही नै
चलतैं; तोहूँ हाथ मुनों!
कैन्हें दूध पिलैतें मम्मी
जों बुतरू नै चाहै छै,
जत्तें सहलै जाय छै बुतरू
ओत्तें सब्भैं साहै छै।
दिनभर पढ़वे-लिखवे के ही
पापा-मम्मी शोर करै,
ई अधिकार कैन्हों सद्दोखिन
बुतरू कें ही बोर करै।
नारा नया लगैतै सब्भैं
परचो-पोस्टर भी बंटतै,
रूल मुताबिक बच्चा हरदम्म
पापाओ सें नै डँटतै।
भोरे-साँझे अपनों साथें
बच्चौ कें घुम्मावें होतै,
खाली पेन्सिल-स्लेटे नै
गुल्ली-लूडो भी लावें होतै।
बुतरु पास करै तें खाली
चुम्मा पापा-मम्मी दै,
पास करै पर पैसा-कुल्फी
पापा दै नै मम्मी दै।
कल सें पैकेट मार्टन, टॉफी
लेमनचुस के लानें होतै,
ऐतनै नै सब बुतरू केरों
भीतरी मन कें जानें होतै!
झूठमूठ गुरु जी के डंडा
कब तक बच्चा खैथैं रहतै,
बच्चा कुछ समझें नै समझें
दिन भर लेशन देथैं रहतै!
खाक परीक्षा-फल होतै की
अच्छा, बोलों बच्चा के, गार्जन
के कनमोचरा-थप्पड़
कोन अंत छै गच्चा के!
बुतरू पर है जौर-जुलुम कें
जेना हुएँ रुकवाना छै,
पापा हमरों बात सुनों
एक युनियन नया बनाना छै।
देखी लेलियै ई रस्ता कें
छोड़ी कोय नै चारा छै,
सब जोर जुलम के टक्कर में
संघर्षे आबें नारा छै ।

# विनती

बाबू पोथी लानी दा,
पेन्सिल एक ठों कीनी दा!
हम्मू अ, आ, ई पढ़वै,
इस्कूली में नै लड़वै।
खल्ली खूब घुमैवै तें
अ, आ जानी जैवै तें?
खोड़ा लिखवैं केना कें,
दीदी लिखै छै जेना कें,
हम्मू पड़वै-लिखवै, तें
पाठ बिहानै रटवै, तें
बड़का आदमी बनवै नी?
साहब हेनों दिखवै नी?
दादा सें तोहें बोली कें
कही दहौं सब खोली कें,
दीदी लें जे लानै छै,
माँगियै मुक्का तानै छै,
हमरो पोथी लानी दा,
पेन्सिल एकठों कीनी दा!

# लार्‌हों

हमरों माय, गाय माय,
कहना छै तोहरा कुछ आय!
की होतै कुछ जरो छिपाय,
हमरा सब छौं पाँच भाय।
पाँचों में हम्मी छोटों,
जेना मटर में राय-गोटों।
हमरों की औकात छै,
भैय्या के की बात छै!
हिन्नें दूध दुहावै छै,
हुन्नें सें सब आवै छै।
कोय गारथैं, कोय गरम-गरम,
पीयै गटगट, करै हजम।
जब तक आवौं टुघुर-टुघुर,
पीते देखौं टुकुर-टुकुर।
देतै कहाँ? चिढ़ाबै छै,
गुस्सा केन्हों बढ़ावै छै!
जानथैं छै, यें करतै की ?
टानी लै छै दूध-दही।
हमरों माय, गाय माय,
कहना छै तोरा कुछ आय!
सबके माय कहावै छों,
कत्तें तोहें सुहावै छों!

मैय्यो सें तोहें उच्चों,
पूँछों तोरों नै बुच्चों!
गोरों-गोरों देह केहनों,
सुद्धी छों हमरे जेहनों!
सबटा दूध दुहाय दै छौ,
है नै, लेरु पिलाय दै छौ।
हमरौ तें तोहें मानथै छौ,
हालो सबटा जानथै छों;
चुरु भरी नै दूध मिलै,
खाय वक्ती नै जीभ हिलै।
मैय्यो उल्टे डाँटै छै,
बड़कै में सब बाँटै छै।
आबें एक ठों तोहरे आस,
यही विचारी ऐलौं पास।
लेरु जरा हटावों नी,
हिन्नौ दूध बढ़ावौ नी!
देखों, बाटी आनलें छी,
पानी में रोटी सानलें छी।
रोटी दूध सें सानी जा,
एतना टा तोहें मानी जा।
तोहरे किरिया, जों जैभौं,
घुरी-फिरी कें नै ऐभौं ।

## भोर

सूरज उगलै, सूरज उगलै,
सबसें पैहलें चिड़ियाँ जगलै।
ऐंगनों-छत पर चहकै छै,
फूल भोररकी मँहकै छै।
चूँ-चूँ-चीं-चीं करै छै कत्तें,
इस्कूली में बच्चा जत्तें।
ठंडा-ठंडा हवा बहै छै,
नींद बेचारी आँख मलै छै।
रात अन्हरिया भागलै कब्भै,
बूढ़ों-बुतरू जगलै सब्भै।
भीती पर मैना फुदकै,
देहरी तांय उछली आवै।
बच्चा कें कोय्यो नै मारै,
सुग्गा भोरे-भोर उचारै ।

## चाँद

चंदा मामा, आरे आवों;
नदिया किनारे आवों!
पानी में नहैवों दोनों,
गीत खुशी रों गैवों दोनों।
तोहरों गोरों-गोरों देह,
धूल सें होतौं कारों देह।
यही डरें नै आवै छों?
पन्द्रह रोज सतावै छों?
चंदा मामा आवों नी,
किस्सा कोय सुनावों नी।
माय के देलों रोटी कें,
दूध सें भरलों बाटी कें,
बड़ी छिपाय कें रखलें छी,
अभियों तक नै खेलें छी,
चंदा मामा आवी जा,
आरो दूर नै भागी जा!
आवों, खैवों रोटी कें,
दूधों आधों बाँटी कें।
मिली-जुली कें साथों में,
हाँसवों-खेलवों रातों में!

## गाँधी बाबा

अंगरेजों लें बड़का आँधी,
सबसें बड़ों महात्मा गाँधी।
गाँधी पीन्है एक लँगोटी,
गाँधी जी रों बड़के लाठी।
गाँधी जी रों चश्मा गोल,
सौंसें देह तें झोंलगा झोल।
गाँधी जी रों बन्दर तीन,
अलगे-अलग बजावै बीन।
बच्चा कहै—नै सोना-चाँदी,
सबसें बड़ों महात्मा गाँधी।

## थुलथुल बाबा

एत्तें केना मोटावै छै?
थुलथुल बाबा आवै छै।
माथों दूध के चुक्का रं,
केकरो-केकरो हुक्का रं;
पेट भोजों के हड़िया रं,
माथों लगै छै कुढ़िया रं;
मिनिर-मिनिर कुछ गावै छै,
थुलथुल बाबा आवै छै।
गोड़ उठै छै थुबुक-थुबुक,
चिड़ियैं नाँखी फुदुक-फुदुक,
पिन्हलें छेलै नया खड़ाम,
बाबा गिरलै चित्त धड़ाम।
कुरल्हों जाय नेंगचावै छै,
थुलथुल बाबा आवै छै ।

# बादल

ताक धिनक धिन, ताक धिनक धिन,
मुन्नी ऐलै बरसा रोॅ दिन!
हाथी बनी कें बादल आवै,
सूँढ़ोॅ सें सबकें नहलावै;
उजरोॅ-कारोॅ ढलमल ढल छै,
लगै पहाड़े रँ बादल छै;
बुली-बुली कें सबरोॅ ऐंगन,
बरसावै पानी सद्दोखिन!
ताक धिनक धिन, ताक धिनक धिन!
की समुद्र छै ई बादल में?
खेत टटैलोॅ डुबलै जल में!
खलखल नद्दी की रं उमड़ै,
रही-रही कें बादल घुमड़ै।
कारोॅ मेघ में ठनका लागै,
धुआँ बीच में जेना आगिन!
ताक धिनक धिन, ताक धिनक धिन!

## रेल

छुक-छुक करतें आवै रेल।
की रं हन-हन करलें आवै,
धुइयाँ सें सब भरलें आवै;
रस्ता सें उतरै नै हेट,
एक्के मूँ छै, सोलह पेट;
सत्तर गोड़ों सें करै छै खेल,
छुक-छुक करतें आवै रेल।
कर्रों-कर्रों देह-हाथ एकरों,
कोयला सें मूँ भरलों जेकरों;
पानी पीयै छै सौ-सौ घैलों,
राकसे रं चिकरै उमतैलों;
तहियो लोगों सें हेकरा मेल,
छुक-छुक करतें आवै रेल ।

## ढोल

कत्तों मारों कम, कम, कम,
ढोल बजै छै ढम्मक-ढम।
नाँचें नै तोंय; थम, थम, थम,
ढोल बजै छै ढम्मक-ढम।
सुनथैं भागी गेलै जम,
ढोल बजै छै ढम्मक-ढम।
पैसा खोलों खेल खतम,
ढोल बजै छै ढम्मक-ढम।
ढम्मक-ढम, ढम्मक-ढम,
मिलथैं पैसा बम-बम-बम ।

# सीख

एक्को रोटी मिलै जों कम,
काका रों मूँ तम-तम तम,
ढम्मक-ढम!
कत्तो अच्छा आलूदम,
पेट बचाय कें कम्मे कम,
ढम्मक-ढम।
हम्में खैलौं दू चमचम;
एकरै में फूलै छै दम;
ढम्मक-ढम।
टानी कें पेटू बेदम,
पेटू कें लै गेलै जम;
ढम्मक-ढम।
ढम्मक-ढम, ढम्मक-ढम,
खा कम्मे कम, ढम्मक-ढम।

## वर्ण कविता–१

अ सें अमरूद ठुर्री छौ,
गुस्सैलों छैं गुर्री छौ?
आ सें आम तें मीट्ठों छै,
लेकिन खैलों जुट्ठों छै।
इ सें इमली खट्टा थू,
उल्लू रों सब पट्ठा ऊ ।

## वर्ण कविता–२

प सें पगड़ी गोल-मटोल,
लागै छै माथा पर ढोल।
फ सें फूल सुहावै छै,
गुम्मां भौरा गावै छै।
ब सें बकरी, बानर, बाघ,
सब जीवों में सिंहे घाघ।
भ सें भाला, भालू, भैंस,
कभियो सहै नै केकरो तैस।
सुन रे मूसों चूँ-चूँ-चूँ,
म सें मुर्गा–कुकडू-कूँ।

# नाम बताव

हल्ला-गुल्ला करें नैं घौल,
उत्तर देलैं नै; लागतौ धौल,
पनरह खेल रॉ नाम बताव!

खोखा, ताश, कबड्डी तीन,
पोलो, जूडो, खेल महीन;
कुश्ती, चौपड़, किरकेट आठ,
शतरंजॉ रॉ अलगे ठाठ;
बैटमिन्टन, टेनिस, घरघोट,
फुटबौलॉ में कहीं नै खोट;
हॉकी आरो भौलीबौल,
आबें केना देवैं धौल?

पनरॉ नदी रॉ नाम ठो बोल,
नै तें कहवौ ही भुसगोल,
जल्दी-जल्दी नाम बताव!

गंगा, बोल्गा, नाइजर तीन,
नील, अमेजन, सी, सालवीन;
डेनीपर, डेन्यूब, कांगो, डोन,
मिसिप, मिसौरी, यमुना, सोन;
पनरो ब्रह्मपुत्रॉ कें गिन,
मिली-जुली सब भाय-बहिन!

दै देलियो नी उत्तर बोल,
हम्मी देवौ तोरा धौल,
कहवैं की हमरा भुसगोल।

# बोली

उल्लू तें घुघुआवै छै,
मुर्गा बाँग लगावै छै।
हिनहिनावै घोड़ा छै,
गड़-गड़-गड़-गड़ सौढ़ा छै।
मूसों करै छै चूँ-चूँ-चूँ,
कुत्ता भूकै भूँ-भूँ-भूँ।
भले कबूतर गुटरू-गूँ,
कुत्ता बच्चा कूँ-कूँ-कूँ।
बेंग सिनी टर्रावै छै,
बाघ मतुर गुर्रावै छै।
सिंह दहाड़ै बड़ा गजब,
झिंगुर झन-झन जेना अजब।
गदहा रेंकै रेंकले जाय,
बकरी संग भेंड़ा मिमियाय।
सुग्गा रटै छै टें-टें-टें,
बत्तख जेना कें-कें-कें।
बैल डकारै, गाय रंभावै,
मक्खी भिन-भिन करलें आवै।
चिग्घाड़ै हाथी की जोर,
कूजै वन-वन बत्तख-मोर।
कानै गीदड़, साँप फुँकारै,
कौआ काँव-काँव गल्लों चीरै।
बिल्ली मौसी बोलै म्याऊँ,
नै पूड़ी, तें मूसे खाँव।

# शिक्षा

धाक धिनक धिन, धिन-धिन-धिन,
चुप मत बैठें, गिनती गिन!
एक्काँ, दूक्काँ, तिनकाँ, चौक्काँ,
पचकाँ, छक्काँ, फेरू सतकाँ,
अठकाँ, नौक्काँ आरो दसकाँ,
दसकाँ सें लै कें तोंय बिसकाँ।
नै पढ़ला सें लै जैतौं जिन,
धाक धिनक धिन, धिन-धिन-धिन।
गिन ऊँगली पर सोमवार कें,
मंगल आरो बुद्धवार कें;
ऊँगली पर गिन वीरवार कें,
शुक्र-शनी, आदित्यवार कें;
एक्को ठो नै भुलैयौं दिन!
धाक धिनक धिन, धिन-धिन-धिन ।

## भालू

भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड।
जहिया सें घूमी ऐलों छै
लंदन आरो हॉलीवुड,
बात करै नै केकरौ सें भी
खाली बोलै—
सी केन कुड,
ही केन कुड,
भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड।
चश्मा सदा चढ़ैले राखै,
हाथों में छोटका इस्टिक,
झबरों-झबरों लातों सें वैं
ढेपों कें मारै छै किक;
खोलै नै टाई कें कभियो
या माथों सें अपनों हुड।
भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड।

## पुरुष पंचांग

लाल बहादुर लाल जय,
सुनथैं दुश्मन खावै भय।
लौह पुरूष सरदार पटेल,
पलना जिनकों वास्तें जेल।
भगत सिंह रं वीर शहीद,
दूसरों अब्दुल एक हमीद।
पर दुखिया रों एक्के आस,
दाढ़ीवाला बाबा मार्क्स ।

## हाथी

टुकढुम-टुकढुम हाथी राम,
तोरों सवारी बिना लगाम।
सूँढ़ लटकलों अजगर रं,
चमड़ों तोरों पत्थर रं,
दाँत दुधे रं चम-चम-चम,
खाना मोंन भरी; नै कम,
पर टुकनी रं आँखे जाम,
टुकढुम-टुकढुम हाथी राम।
पेट छेकौं कि छेकौं पहाड़?
गोड़ छेकौं या गाछे ताड़?
लगौं डमोलों तोरों कान,
तोरों मालिक बस पिलवान।
सब बुतरू रों तोरा सलाम!
टुकढुम-टुकढुम हाथी राम।

## फक्कड़दा रों पाठ

अक्कड़ सक्कड़ लक्कड़ दा,
गुरु जी बनलै फक्कड़ दा।
चैतों संग बैशाख पढ़ावै,
ई दोनों पर जेठ चढ़ावै,
जेठों पर आषाढ़ बतावै,
जै पर सावन-भादों लावै,
आसिन, कातिक तुरत गिनै छै,
अगहन बादे पूस तनै छै,
हेकरों बाद जे आवै माघ,
लागै जेनां ऐलै बाघ,

फागुन जेकरा नाच नचावै,
फगुवो कें नचवैलें आवै,
बुतरू कें कुछ भार नै लागै,
हेनै पढ़ावै गप्पड़ दा।
अक्कड़ सक्कड़ लक्कड़ दा,
गुरु जी बनलै फक्कड़ दा।

बारों महीना, ऋतुओ छों,
पढ़ चों, छों, जों, पों, फों, बों,
गर्मी पीछू वर्षा दौड़ै,
जेकरों टांग शरदजी तोड़ै,
तहियो कोमल बड़ा शरद,
सब मीट्ठों में जेना शहद,
गोय्याँ एकरों एक हेमन्त,
पीछू-पीछू राखै तन्त।
बचलै शिशिर, बसन्त सुनों,
दू में अच्छा कोंन? चुनों!
बच्चा कें लटकैलें राखै,
बच्चा बोलै गप्पड़ दा।
अक्कड़ सक्कड़ लक्कड़ दा,
गुरु जी बनलै फक्कड़ दा ।

# मामा

मामा बड़ा ही सुन्दर है।
जगथैं शोर मचावै है,
धम-धम करलें आवै है,
खाय लें खोजै रही-रही,
ढूँढ़ै दिन भर दूध-दही,
कुछ नै कुछ मिलिये ही जाय है,
किस्मत केरों सिकन्दर है,
मामा बड़ा ही सुन्दर है।

खाय कें निकली डकरै है,
सब पर रही-रही चिकरै है,
चिकने-चिकने खाली खाय,
छिपली-छिपली दूध-मलाय,
जोंन घरों में खोआ-पेड़ा
समझों मामा अन्दर है,
मामा बड़ा ही सुन्दर है।

मामा मानें चप-चप-चप,
रसगुल्ला सब गप-गप-गप,
पूड़ी-कचौड़ी हप-हप-हप,
जिब्भा दिन भर लप-लप-लप,
हम्में कुछ माँगिये तें बोलै—
ई तें बड़ा छुछुन्दर है,
मामा बड़ा ही सुन्दर है।

## डोमनदा

दूगो पैसा चा-चा-चा,
डोमन दा सें खुश बच्चा।
डोमनदा रों कोन निशान?
हाथ में बौकड़ी, मूँ में पान,
बात-बात पर हा-हा-हा,
खलखल हाँसै डोमनदा।

दूसरों हुनकों कोन निशान?
तनिया टा नै शान-गुमान,
सा सा रे रे ग म पा,
कवि-आलोचक डोमन दा।

तेसरों हुनकों कोन निशान?
सौ गो पोथी हुनकों जान,
चलै बुतरुवे रं पा-पा,
दू मन भारी डोमन दा।

## ऊँट

ऊँट-ऊँट उठले ही जाय,
रेगिस्ताने में दिखलाय।
पीठी पर पहाड़ छै,
सर्दी लगै नै जाड़ छै।
पानी पियै नै कै-कै दिन,
एक, दू, तीन, चार, पाँच, छों गिन।
गर्दन बगुला रं उच्चों,
पूँछ मतुर बुच्चों-बुच्चों।
बालू पर की करै कमाल,
मलकी-मलकी चलै छै चाल।
नै तिनसुकिया, नै धुलियान,
ई जहाज बालू रों यान।
सूप डंगावों या कोय टीन,
भागथौं नै ई, भेद महीन।*
जौनें कहतै भेद महीन,
गिनें नै पड़तै एक, दू, तीन।

(*प्राचीन समय में ऊँट सेना में शामिल छेलै, आरो जे भाला, तलवारों सें नै डरलै, ऊ भला सूप या टीन डंगैला सें केना डरें पारें।)

## जोड़

एक+दू = तीन,
अच्छा नै रीन।
दू+तीन = पाँच,
ऐंगना में नाँच।
पाँच+तीन = आठ,
पढ़लै पर ठाठ।
जे गिनतै दस-दस,
भात खैतै गस-गस।

## टुनमा रों अंग देश

अंग देश रों टुनमा वासी,
जेकरों वास्तें अंगे काशी।
वीर कर्ण रों देश यही,
टुनमा उछलै कही-कही।
एकरों नदी ले मन में खोसी,
चानन, गंगा, आरो कोसी।
जानवे तोहें देर-सबेर,
अंग देश रों महिमा ढेर।
मौसा-मौसी यही कहै,
ऋष्योशृंगी यहीं रहै।
पूज्य वासूओ कें नै भूल,
झुलवा पर तोहें कत्तों झूल।
विक्रमशील हौ विद्यापीठ,
अभियो गिरी खड़ा छै ढीठ।
पढ़ी-लिखी कें अपनों ज्ञान,
मंदारे रं उच्चों तान।

चन्दनवाला, बिहुलामाय,
सब बुतरू पर हुऍ सहाय।
टुनमा खाय कें एक अनरसा,
घूमी ऐलै लगे सहरसा;
भागलपुर सें मधेपुरा,
दिखलै कोय नै एक बुरा;
ई खुल्लै तभिये जाय पोल,
तुरत पहुँचलै जबें सुपोल।
साहेबगंज में साहब पाँच,
बदमाशों रों करै छै जाँच।
देवघर, दुमका, गोड्डा तीन,
घुमतें-घुमतें ऐलै नीन।
बेगूसराय ठहरलै जाय,
एक पुलिस सें धक्का खाय,
लेलकै कटिहारों में होश,
फेनू चली कें छों-छों कोस,
आय पूर्णिया एलों छै,
मछली खाय मुटैलों छै।
किसनगंज में लगलें लू,
ऐलै अररिया झाँपलें मूँ;
भले खगड़िया परसू जाय,
बाँके में ऊ रहतै आय;
कल जैतै मुंगेर किला,
आरो जमुई नया जिला,
अंग देश रों यही भुगोल,
आपनों भाषा 'आंगी' बोल।